विद्याभवन,बालिका विद्यापीठ, लक्खीसराय

वर्ग-नवम्

लघुकथा लेखन

कथा लेखन एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। वह एक ऐसा रमणीय उद्यान नहीं, जिसमें भाँति-भाँति के फूल, बेल-बूट सजे हुए हैं, बल्कि एक गमला है, जिसमें एक ही पौधे का माधुर्य अपने संपूर्ण रूप में दृष्टिगोचर होता है।"

कहानी के सम्बन्ध में प्रमुख बातें (Important Points of Hindi Story)

- कहानी ने अपनी यात्रा के क्रम में अनेक पड़ावों पर विश्राम किया है पर उसकी गति कभी भी अवरूद्ध नहीं हुई है। हाँ एक बात हुई है अवश्य और वह यह कि समय के अनुसार इसके रूप-विन्यास और रचना-प्रक्रिया में परिवर्तन हुआ है। वही इसकी प्रगतिशीलता की जीती-जागती निशानी है। देव-दानव, मानव, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, इहलोक-परलोक आदि सभी की कहानियाँ कमो-वेश, सभी, भाषाओं में मिलती हैं। पर समय के साथ इसमें परिवर्तन होता है। वे मात्र मनोरंजन या उपदेश देने के लिए लिखी जाती थी।

- कहानी ने अपनी यात्रा के क्रम में अनेक पड़ावों पर विश्राम किया है पर उसकी गति कभी भी अवरूद्ध नहीं हुई है। हाँ एक बात हुई है अवश्य और वह यह कि समय के अनुसार इसके रूप-विन्यास और रचना-प्रक्रिया में परिवर्तन हुआ है। वही इसकी प्रगतिशीलता की जीती-जागती निशानी है। देव-दानव, मानव, पशु-पक्षी, कीट-पतंग, इहलोक-परलोक आदि सभी की कहानियाँ कमो-वेश, सभी, भाषाओं में मिलती हैं। पर समय के साथ इसमें परिवर्तन होता है। वे मात्र मनोरंजन या उपदेश देने के लिए लिखी जाती थी।

- आज की कहानियों में न तो कथावस्तु, न चरित्र-चित्रण, न उपदेश आदि की प्रमुखता रहती है। आज की कहानियाँ मानव मन की उलझी गुत्थियों को सुलझाने का प्रयास करती है। कौतूहल और मनोरंजन की जगह आज का प्रबुद्ध पाठक कहानियों में अपने मानसिक अन्तर्द्वन्द्वों को पकड़ने की कोशिश करता है। फिर भी मनोरंजकता पूरी तरह समाप्त नहीं हो पायी है।

- मनुष्य आज अंधविश्वासों की भूमिका में भटकने के बजाय अपने पुरूषार्थ पर अधिक भरोसा करने लगा है। भाग्य को वह चुनौती देता हुआ प्रतीत हो रहा है। अतः *आज की कहानियों में जीवन के संघर्षों का पक्ष सबल है।*

नई शिक्षा पद्धति के अनुसार कहानी लेखन के स्वरूप में भी बदलाव किया गया है। इसके फलस्वरूप कहानी चार प्रकार से पूछी जा सकती है, ये प्रकार निम्नलिखित हैं –

1. कहानी से सम्बंधित अधिक-से-अधिक मुद्दे दे कर।
2. कहानी से सम्बंधित कुछ मुख्य मुद्दे दे कर।
3. कहानी की शुरुआत की कुछ पंक्तियाँ दे कर।
4. कहानी की अंतिम पंक्तियाँ दे कर।

नोट –

कहानी लेखन (लघु कथा लेखन) कक्षा 10 वीं के लेखन कौशल के भाग-इ में पूछा जाना वाला प्रश्न है। यह प्रश्न 5 अंकों के लिए पूछा जाता है। इस प्रश्न में आपको विकल्प दिए जाते हैं और आपको अपनी इच्छा से कोई एक विकल्प चुन कर लिखना होता है। इस प्रश्न में शब्दों की सीमा सीमित रखी जाती है जो 100 से 120 शब्दों की होती है।

‘कहानी लेखन (लघु कथा लेखन)’

कहानी लेखन की निम्नलिखित विशेषताएँ है-

(1) आज कहानी का मुख्य विषय मनुष्य है, देव या दानव नहीं। पशुओं के लिए भी कहानी में अब कोई जगह नहीं रही। हाँ, बच्चों के लिए लिखी गयी कहानियों में देव, दानव, पशु-पक्षी, मनुष्य सभी आते हैं। लेकिन श्रेष्ठ कहानी उसी को कहते है, जिसमें मनुष्य के जीवन की कोई समस्या या संवेदना व्यक्त की गई होती है।

(2) पहले कहानी शिक्षा और मनोरंजन के लिए लिखी जाती थी, आज इन दोनों के स्थान पर कौतूहल जगाने में जो कहानी सक्षम हो, वही सफल समझी जाती है। फिर भी, मनोरंजन आज भी साधारण पाठकों की माँग है।

(3) आज का मनुष्य यह जानने लगा है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता है, वह किसी के हाथ का खिलौना नहीं। इसीलिए आज की कहानियों का आधार मनुष्य के जीवन का संघर्ष है।

(4) आज की कहानी का लक्ष्य विभिन्न प्रकार के चरित्रों की सृष्टि करना है। यही कारण है कि आज कहानी में चरित्र-चित्रण का महत्त्व अधिक बढ़ा है।

(5) पहले जहाँ कहानी का लक्ष्य घटनाओं का जमघट लगाना होता था, वहाँ आज घटनाओं को महत्त्व न देकर मानव-मन के किसी एक भाव, विचार और अनुभूति को व्यक्त करना है। प्रेमचन्द ने इस सम्बन्ध में स्पष्ट लिखा है, "कहानी का आधार अब घटना नहीं, अनुभूति है।"

(6) प्राचीन कहानी समष्टिवादी थी। सबके हितों को ध्यान में रखकर लिखी जाती थी। आज की कहानी व्यक्तिवादी है, जो व्यक्ति के 'मनोवैज्ञानिक सत्य' का उद्घाटन करती है।

(7) पहले की उपेक्षा आज की कहानी भाषा की सरलता पर अधिक बल देती है; क्योंकि उसका उद्देश्य जीवन की गाँठों को खोलना है।